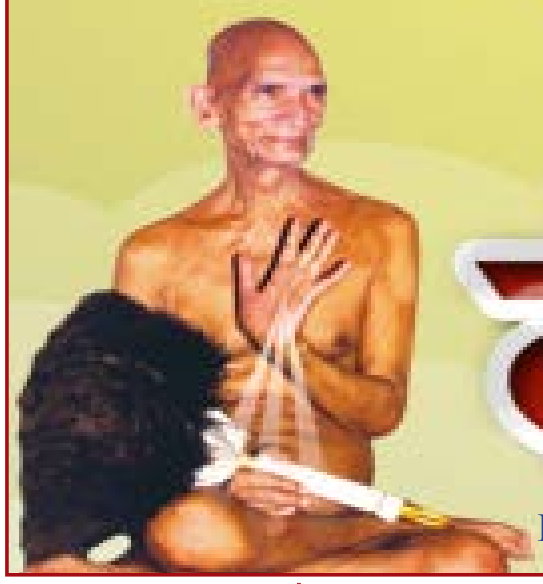

Issue: 143
29 August 2020
www.jainachar.com Daily

जैनाचार

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

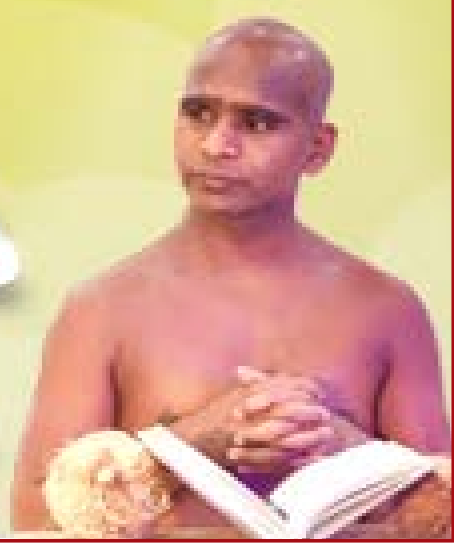

mÙke ri g] lkèuk dk ekxZ

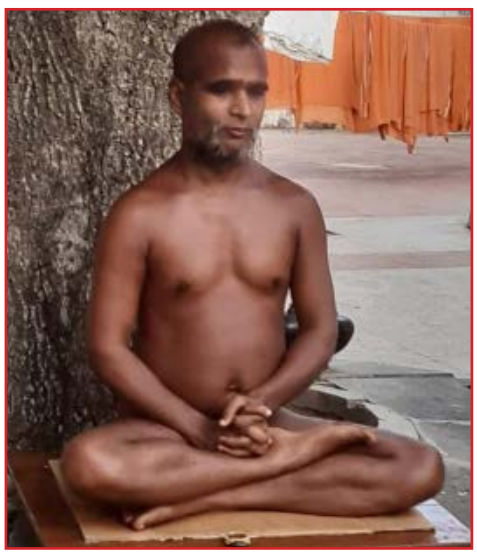

दो तरह के मार्ग हैं। एक साधनों का मार्ग है और एक साधना का मार्ग है। साधनों का मार्ग सुख सुविधा का मार्ग है और साधना का मार्ग स्वतंत्र स्वाधीन तपश्चर्या का मार्ग है। भारतीय संस्कृति ने धर्म के लिए साधन संपन्न नहीं साधना संपन्न निरूपित किया है। यहां भोग को नहीं योग को, त्याग को स्थान मिला है। सारा संसार विषयासक्त है। यहां पर विषय–विरक्ति और आत्म अनुरक्ति बड़ी दुर्लभ है। राग बहुल संसार में वैराग्य तपश्चरण को पाना बड़ा कठिन है। इसलिए तप आत्मशोधन का परम साधन है। तपा जाए सो तप है ऐसा तप दोषों की निवृत्ति कराता है। अग्नि में तपने पर ही स्वर्ण में शुद्धता प्रकट होती है। बल्कि सोने की कीमत से ज्यादा सोने की भस्म की कीमत मानी गई है। धूप में फल पकते हैं तो उनमें मिठास आ जाती है, आंच में पकने पर भोजन स्वादिष्ट हो जाता है, अग्नि में पका हुआ कुंभ गर्मी में सबकी प्यास तो बुझाता ही है, सिर पर धारण किए जाने पर महान सम्मान को भी पाता है। काले कोयले को स्वच्छ धवल बनाने का तरीका सिर्फ एक ही है कि उसे आंच में तपाया/जलाया जाए।

जन्म से लेकर मरण पर्यन्त आदमी आशा और निराशा में जीता है। मनुष्य के बारे में कहा गया है कि मनुष्य रोते हुए जन्मता है, अपेक्षाओं में जीता है और निराशा से मरता है। ऐसे में साधना और धर्म का मार्ग ही हमारे लिए कल्याण कराने वाला है। बारह भावना में भी कहा है।

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे भ्रम छोर।
या विध बिन निकसे नहीं, पैठे पूरब चोर।।

तप का मतलब सिर्फ उपवास भोजन नहीं करना सिर्फ इतना ही नहीं है बल्कि तप का असली मतलब है कि इन सब क्रिया के साथ अपनी इच्छाओं और ख्वाहिशों को वश में रखना ऐसा तप अच्छे गुणवान कर्मों में वृद्धि करते है।

l;e dk efnj ij lekfèk dk f'k[kj ij p<+ x,

मायने यह नहीं रखता आपने कितनी सांसे ली
मायने यह रखता है कि आपने कितनी सांसे आनंद से ली....

आत्मार्थी सज्जनों साधना का सार है क्षमता, क्षमता का सार संयम और संयम का सार समाधि है। समाधि जीवन भर अच्छी साधना की है अच्छी पढ़ाई की है तो उसका समाधी मरण देख लो तो समझो परीक्षा में रैंक प्राप्त हो गया।

संयम रत्ना संभाल विषय चोर बहू फिरत है...

.ज्ञानियों सबसे बड़ा धर्म संयम है, अहिंसा स्वयं तप जिनके जीवन में है उन्हें देवता भी नमस्कार करते हैं। संयम समाधि का सोपान है, मन वचन काय के संयम को साधो, मन को साधो तो सिद्ध पद को पाओगे। कभी भी मन बिगड़ गए तो वचन को संभाल लो इसलिए भगवान महावीर स्वामी कह गए मन वचन काय का संयम संभाल लो। मन जाता है तो जाने दे तू मत जाओ शरीर, युवाओं! कभी–कभी मन में किसी को मारने की इच्छा होती है तो तुरंत उसे मारने मत पहुंच जाना, ऐसा करने से बहुत बड़ा अनर्थ होता है इसीलिए कहा है मन जाता है मन में आता है तो आने दो पर वचन से और काय से अशुभ वचन अशुभ कार्य ना करें संयम होना जरूरी है।

जिनने जीवन में संयमी की सेवा की है उनके जीवन में एक दिन संयम जरूर आता है। संयम का सार समाधि है और यह बात सहस्त्र सागर जी महाराज जी ने कर दिखाई। मुनी श्री सहस्त्र सागर जी गत 10 वर्षों से साधना रथ थे और बड़े ही शक्तिमान सरल साधक थे गुरु ने जो कहा उसे बड़े सरलता से स्वीकार कर लेते थे। उसी का फल था कि गुरु चरण में सहस्त्र सागर जी महाराज जी की गुरु मुख से संबोधन सुनते सुनते अंतिम श्वास को विराम दिया।

आत्म प्रक्षालक : दशलक्षण पर्व
प.पू. गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी

उत्तम तपः अनादिकालीन राग-द्वेष मोह की किट्टकालिमा युक्त आत्मा को शुद्ध बनाने के लिए अंतर-बाह्य तपों से आत्मा को तपना ही उत्तम तप धर्म है। तप्यते इति तपः, जिससे आत्मा को तपाया जाये, जिसके बिना कर्मो का क्षय व मोक्ष नहीं हो सकता वह तप है। बड़े बड़े तीर्थंकर भी तपस्या करते हैं तब कहीं उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है। तप की व्याख्या करते हुए कहा गया है, तप इसमें दो अक्षर है, एक त, दूसरा प-त अर्थात् जो संसार से तारे तथा प अर्थात् जो संसार से पार करा दे। वह तप ही पापों से उवार दे तथा आत्मा को पवित्र शीतल कर दे वह तप है। यदि इसका उल्टा करें तो पत हो जायेगा। पत यानि पतन तथा जो पतन से बचावे वह तप है। तप यदि समता के साथ किया जाता है तो आनंद उत्पन्न करता है। और यदि न बन पाये तो वही दुःख का कारण बनता है। शक्तितस्तपः शक्ति के अनुसार तप करने की बात कही है। यदि शक्ति से अधिक करोंगे तो आकुलता संक्लेशता बढ़ेगी, विशुद्धि घट जायेगी और यदि शक्ति को छिपाओंगे तो कर्मो की निर्जरा संभव नहीं है। अतः शक्ति के अनुसार किया गया तप, तप ही मुक्ति का कारण है। हे भव्य प्राणीयों! यदि संसार समुद्र से पार होना चाहते हो, परमधाम पाना चाहते हो, परमधाम की यात्रा करना चाहते हो तो श्रेष्ठ उत्तम तप धर्म को जीवन में अंगीकार करो।

bfUæ; vkSj eu dh xqykeh ij vkRek dh fot; dk io gS mÙke l;e

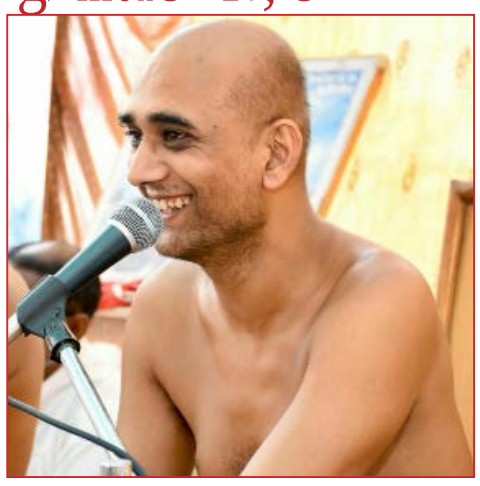

आचार्य श्री अनुभव सागर महाराज ने लोहारिया जैन मन्दिर में आज के धर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आत्म साधना के सोपानों की एक महत्वपूर्ण सीढ़ी है उत्तम संयम धर्म। उत्तम इसलिये है कि धर्म क्रियाओं के पालन का लक्ष्य कोई लौकिक आकांक्षा नहीं बल्कि आध्यात्मिक उन्नति है। संयम शब्द का शाब्दिक अर्थ है– समीचीन रूप से इन्द्रियों का निग्रह। वह इंद्रिय संयम और प्राणी संयम के भेद से दो प्रकार का होता है। जैसा कस्ट मुझे होता है वैसी ही तकलीफ अन्य प्राणियों को भी होती होगी। जैसा सामर्थ्य मुझमें है, वैसी ही शक्ति अन्य जीवों में भी है ऐसा स्वीकार भाव हम जीवों की रक्षा, दया, करुणा जैसे मानवीय मूल्यों से परिपूरित कर देता है। ऐसे ही दुनिया भर में अधिकांशतरू अनर्थो की जड़ है इन्द्रियों की दासता/इन्द्रियों का दास सदैव उदास बना रहता है जबकि इंद्रिय दमन रूप संयम के अभ्यासी के मुख पर स्वयमेव ही कांति दमन उठती है। संयम ही भव रोग की एकमात्र औषधि है।

गुरुदेव कहते थे, मैं नहीं कहता कि भोग–उपभोग मत करो, परंतु अपनी मर्यादा का खयाल तो रखो बस यही मर्यादा का खयाल रखना ही संयम है। वाहन चलाने वाला कितने ही वेग से वाहन चलाये पर उसके हाथ–अथवा पैर यथोचित ब्रेक पर रहते हैं। जिस व्यक्ति का कंट्रोल ब्रेक पर नहीं उसकी दुर्घटना निश्चित है ब्रेक का अर्थ ही संयम है। इंद्रियों पर लगाया हुआ अंकुश ही प्राणी संयम का आधार बनता है। वरना बेलगाम इन्द्रियों के अधीन प्राणी क्या–क्या अनर्थ नहीं करता/स्पर्शन इंद्रिय का गुलाम हाथी जो गजराज कहलाता है, कामपीड़ा से व्यथित हथिनी के पीछे गड्ढ़े में गिर कर महावत का गुलाम हो जाता है । रसना की लोलुपता के वशीभूत मछली जाल यानि कांटे में फंस जाती है घ्राण यानी नासिका के वस भ्रमर पुष्प में ही संकुचित हो स्वयं ही अपनी इहलीला समाप्त कर देता है चक्षु का तो कहना क्या अनर्थों की जड़ है रुप।

घर घर मंदिर...घर घर भगवान...

Jherh jf'e yqgkMh;k us dh
iapes# th ds ikap miokl dh ri lkèuk] NcMk

धर्मनिष्ठ परिवार श्रीमान प्रकाश मंजु लुहाडिया पुत्रवधु एवं धर्मपत्नी जितेंद्र लुहाडिया द्वारा पंचमेरु के पांच उपवास की तप आराधना की पूर्ण की श्री मर्दुला जैन ने बताया की ऐसे कोरोना काल के समय एसी तपस्या सचमुच अद्वितीय है। उन्होंनेबताया कि कोरोना काल मे घर को मंदिर मानकर घर मे ही रहकर पूजन आदि किया और निरन्तर धर्म साधना की। ऐसे भीषण समय में श्रीमति रश्मि लुहाडीया की तपस्या किसी अतिशय से कम नहीं है और इनकी तप साधना युवा पीढ़ी के लिए एक मिसाल है। हम इनकी अनुमोदना करते है और कामना करते है इनका धर्म और व्रद्धिगत हो।

अभिषेक जैन लुहाडियारामगंजमंडी